BAI Hons & Subsidiary

Philosophy

Jain's theory of Bondage & liberation

अन्य भारतीय दर्शनों की भाँति जैन दर्शन भी 'बन्धन और मुक्ति (मोक्ष) की सामान्य अवधारणा को स्वीकार करती है, भारतीय दर्शन में बन्धन का अर्थ निरन्तर जन्म ग्रहण करना संसार के दुखों का उपभोग करना माना गया है। जैन दर्शन में भी बन्धन का अर्थ जीवों को सांसारिक दुखों में लिप्त होना तथा जन्म-जन्मान्तर तक भटकना माना गया है,

जैन दर्शन के अनुसार अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति तथा अनन्त आनन्द को जीवों का अनन्त लक्षण माना गया है जिसे अनन्त चतुष्टय भी कहा जाता है, परन्तु बन्धन ग्रस्त जीवों में सारी प्रवृत्तियों का लोप हो जाता है। जिस प्रकार मेघ सूर्य के प्रकाश को ढँक लेता है ठीक उसी प्रकार बन्धन की स्थिति में आत्मा के स्वाभाविक गुणों पर पर्दा पड़ जाता है। अब प्रश्न उठता है कि आत्मा किस प्रकार बन्धन ग्रस्त हो जाती है? जैन दर्शन के अनुसार आत्मा का शरीर के साथ संयोग होने एवं शरीर का निर्माण पुद्गल कणों के साथ हो जाता है तो बन्धन का मूल का कारण है। अज्ञानता के कारण आत्मा में चार प्रकार की वासनाएं क्रोध (Anger) मान (Pride), लोभ (Greed) और माया (Infatuation) निवास करने लगती हैं। उपर्युक्त चार प्रकार की कुप्रवृत्तियों से ग्रसित जीव (आत्मा) शरीर धारण कर लेते हैं तथा पुद्गल कणों को अपनी ओर आकर्षित करती है। पुद्गल कणों को आकर्षित करने के कारण इन कुप्रवृत्तियों को 'कषाय' कहा जाता है।

P. T. O

Date

पुद्गल कणों को 'कर्म' कहा जाता है, जीव
के कर्मों के अनुसार ही पुद्गल कणों को अपनी
करती है, इस प्रकार जीवों (आत्मा) के शरीर भी
कर्मों के द्वारा निर्मित होती है।

जैन दर्शन में अनेक कर्मों को स्वीकार कि
है - आयु कर्म, ज्ञानावरणीय कर्म, अन्तराय कर्म,
कर्म तथा दर्शनावरणीय कर्म। मनुष्य की आयु नि
करनेवाला कर्म आयु कर्म, अज्ञान उत्पन्न करने
कर्म को ज्ञानावरणीय कर्म, आत्मा की स्वाभावि
को रोकने वाले कर्म अन्तराय कर्म, उच्च या निम्न वर्ग
उत्पत्ति करने वाले कर्म को गोत्र कर्म, सुख-दुःख की
उत्पन्न करनेवाले कर्म को वेदनीय कर्म तथा विश्वा
नष्ट करनेवाले कर्म को दर्शनावरणीय कर्म कहलाता

चूँकि जीव (आत्मा) कर्मानुसार पुद्गल कण
आकृष्ट करती है। इसलिए आकृष्ट पुद्गल कर्म कणों
पुद्गल कहा जाता है। आत्मा की ओर प्रवाहित कर्म पु
को 'आस्रव' कहा जाता है। आस्रव जीव का स्वभाव
नष्ट कर देता है और उसके बन्धन में जीव बन्धनग्रस्त
हो जाता है।

बन्धन भी दो प्रकार के - भाव बन्ध (Ideal
Bondage) तथा द्रव्य बन्ध (Real Bondage) होते हैं।
जब आत्मा में चार प्रकार की कुप्रवृत्तियाँ प्रवेश करती हैं। तो
आत्मा बन्धनग्रस्त हो जाती है जिसे भाव बन्ध (Ideal Bon
कहा जाता है, जब कि पुद्गल कणों का प्रवेश ही भाव बन्ध
कहलाता है। जीव और पुद्गलों का संयोग ही

MICO LUBRICANTS

P. T. O.

किसी एक को अपनाना आवश्यक माना जाता है ... दर्शनों ने सिर्फ सम्यक् ज्ञान को मोक्ष के लिए आवश्यक माना है तो कुछ दर्शनों ने सिर्फ सम्यक् दर्शन को ही माना गया है, लेकिन भारत में कुछ ऐसे भी दर्शन हैं जो मोक्ष के लिए सम्यक् चरित्र को भी आवश्यक मानते हैं। लेकिन जैन दर्शन की यह विशेषता है कि वह तीनों मार्गों को ही सामंजस्य स्वरूप बतलाकर तीनों एकसाथ मिलाकर मोक्ष के लिए आवश्यक मानता है। यही कारण है कि जैन का मोक्ष मार्ग अपने आप में अद्वितीय है। इसलिए रत्नत्रय के लिए सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र का सम्मिलित प्रयोग आवश्यक है।

सम्यक् दर्शन (Right Faith) - तत्त्व के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न करना ही सम्यक् दर्शन कहलाता है। सम्यक् दर्शन का अर्थ अन्ध विश्वास का अभाव है। सम्यक् दर्शन का अर्थ बौद्धिक विश्वास (Rational faith) है। जैन दर्शन स्पष्ट ही अन्ध विश्वास का विरोधी रहा है, यही ने स्वीकार करने से मानव को पवित्र हो जाना तथा बुद्धिपूर्वक जाँचे और परीक्षण करने से रूढ़िवादिता समाप्त होता है जो अन्धविश्वास का प्रतीक है।

सम्यक् ज्ञान (Right Knowledge) जीव और अजीव के भेद को स्पष्टपूर्वक जान लेना ही सम्यक् ज्ञान कहलाता है। जीव और अजीव के भेद को भली भाँति न जानने के कारण ही बन्धन का अनुभव होता है जिसे दूर करने के लिए ज्ञान का होना आवश्यक है। सम्यक् ज्ञान संशयहीन तथा दोषरहित होता है। सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति में कुछ कर्म बाधक होते हैं जिन्हें पूर्ण विनाश से सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

P.T.O.

कालान्तर की वृद्धि का कारण अहिंसा की श्रेष्ठ भावना है,

अस्तेय (Non-stealing) - अस्तेय का अर्थ चोरी का निषेध। धन के बिना मानव जीवन अतिचारहीन माना जाता है। इसलिए किसी व्यक्ति के धन का अपहरण करने की भावना उसके जीवन के अपहरण के समान है। अतः चोरी का निषेध नैतिक अनुशासन के अन्तर्गत आता है,

ब्रह्मचर्य - ब्रह्मचर्य का अर्थ वासनाओं के परित्याग से है। मानव वासनाओं के अधीन होकर अनैतिक कार्यों को अपना लेता है। ब्रह्मचर्य का साधारणतः इन्द्रियों की निग्रह करना है परन्तु जैन दर्शन में सभी प्रकार की वासनाओं का परित्याग ही ब्रह्मचर्य कहलाता है। जिसका पालन मन, वचन तथा कर्म से होना आवश्यक बतलाया गया है,

अपरिग्रह (Non-attachment) - अपरिग्रह का अर्थ विषयासक्ति का त्याग है। सांसारिक वस्तुओं से निर्लिप्त रहना ही अपरिग्रह के लिए आवश्यक माना जाता है। सांसारिक विषयों के रूप, स्पर्श, गन्ध, स्वाद तथा शब्द इन पाँच इन्द्रिय विषयों का परित्याग मन, वचन तथा कर्म से होना आवश्यक है

उपर्युक्त व्रतों का अपनाना व्यक्ति को मोक्ष की अनुभूति करने लगता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए त्रिरत्नों की आवश्यकता होती है। व्यक्ति आत्मा के अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति होती है,